ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 14 अंक 17 कुल पृष्ठ-8 24 से 30 जनवरी, 2019 दयानन्दाब्द 194 सृष्टि सम्वत् 1960853119 सम्वत् 2075 मा.शी.शु.-14

सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग की बैठक दिनांक 20 जनवरी, 2019 को

सार्वदेशिक सभा के सभागार में सम्पन्न

रामचन्द्र छत्रपति के हत्यारे गुरमीत उर्फ राम-रहीम को हुए आजीवन कारावास पर

छत्रपति के बेटे अंशुल छत्रपति को इस संघर्ष के लिए दी गई बधाई

पाखण्ड के विरुद्ध प्रचण्ड अभियान चलाने का लिया गया निर्णय

सप्तक्रांति के द्वारा देश की जनता को किया जायेगा जागरूक

आर्य समाज की शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली की अन्तरंग की महत्त्वपूर्ण बैठक दिनांक 20 जनवरी, 2019 को सभा के सभागार में सम्पन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने की। सभा का संचालन सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य ने अत्यन्त कुशलता के साथ किया। इस अवसर पर विशेष रूप से सार्वदेशिक सभा के पूर्व प्रधान स्वामी अग्निवेश जी, सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी, उपप्रधान आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी, उपप्रधान श्री अनिल आर्य जी, उपमंत्री श्री राम सिंह आर्य जी, श्री मधुर प्रकाश जी, श्री अश्विनी कुमार आर्य प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, श्री बिरजानन्द एडवोकेट, स्वामी चन्द्रवेश जी, स्वामी विजयवेश जी, डॉ. सुरेन्द्र सिंह कादियान, श्री रामेन्द्र गुप्ता, मंत्री बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा, स्वामी सच्चिदानन्द, श्री राम कुमार सिंह आर्य, श्री राजवीर आर्य, श्री हरदेव सिंह आर्य, श्री कमल आर्य नागदा, श्री पूर्णचन्द्र आर्य मंत्री झारखण्ड राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री सुशील बाली एडवोकेट, श्री जय प्रकाश आर्य सोहटी, प्रो. बलजीत सिंह आर्य, स्वामी सुधानन्द जी, स्वामी वेदात्मवेश जी, स्वामी सम्यक क्रांतिवेश जी, श्री दयाकृष्ण कांडपाल, श्री हाकम सिंह आर्यवंशी, श्री संत कुमार आर्य, श्री बलजीत सिंह आर्य, श्री ऋषिपाल आर्य, बहन पूनम आर्या, बहन प्रवेश आर्या सहित विभिन्न प्रदेशों से पधारे सैकड़ों गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे। बैठक में अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन हरिद्वार के सफल आयोजन के लिए सभा के पदाधिकारियों के कुशल नेतृत्व एवं कार्यशैली की प्रशस्ति करते हुए प्रस्ताव पारित किया गया। सभी उपस्थित सदस्यों ने सम्मेलन को ऐतिहासिक बताते हुए कहा कि आर्य समाज के इतिहास में पहली बार गुरुकुलों का इतना बड़ा महासम्मेलन आयोजित हुआ जो अपने आपमें सभा की एक महान उपलब्धि है। सम्मेलन में देश के कोने-कोने से हजारों आर्यजनों एवं सैकड़ों गुरुकुलों के छात्र-छात्राओं, आचार्य-आचार्याओं, लब्धप्रतिष्ठ विद्वानों, सैकड़ों संन्यासियों तथा विशिष्ट राजनेताओं की उपस्थिति से सम्मेलन की गरिमा आकाश की ऊँचाइयों को छू रही थी। सम्मेलन का उद्घाटन करने के लिए विशेष रूप से पधारे विश्वविख्यात योगगुरु स्वामी रामदेव जी महाराज ने स्वयं सम्मेलन की प्रशस्ति करते हुए इसे एक ऐतिहासिक आयोजन बताया। बैठक में सम्मेलन के आय-व्यय का विवरण प्रस्तुत किया गया तथा दान-दाताओं का धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

प्रान्तीय सभाओं के संगठन एवं गतिविधियों की समीक्षा करने के उपरान्त निश्चय किया गया कि सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान में प्रान्तीय सभाओं के सहयोग से देश में धार्मिक अन्धविश्वास एवं पाखण्ड के विरुद्ध एक प्रचण्ड अभियान प्रारम्भ किया जायेगा। इस अभियान के अन्तर्गत जन-चेतना यात्राएँ, पाखण्ड खण्डन सम्मेलन, विचार गोष्ठियों तथा पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से सप्तक्रांति के बिन्दुओं पर जनता में प्रचार करना मुख्य होगा। सभा की ओर से नशाखोरी, जातिवाद, साम्प्रदायिकता, भष्टाचार, धार्मिक अन्धविश्वास एवं पाखण्ड, महिला उत्पीड़न तथा शोषण के विरुद्ध जन-चेतना अभियान प्रारम्भ से ही चल रहा है। इसे और अधिक तीव्र गति से चलाने के लिए सार्वदेशिक सभा निकट भविष्य में साधारण सभा का अधिवेशन बुलाकर रचनात्मक योजना तैयार करेगी। एक प्रस्ताव के द्वारा आर्य समाज के सशक्त युवा संगठन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् एवं इसके शंखनाद 'राजधर्म' पत्रिका की स्थापना के 50 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में आगामी 9 व 10 मार्च, 2019 को स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, जिला-रोहतक, हरियाणा में होने वाले भव्य 'स्वर्ण जयन्ती' समारोह को युवाओं के लिए एक प्रेरणादाई समारोह बनाने में सभा अपना पूरा सहयोग करेगी। सभी प्रान्तीय सभाओं से भी यह अपील की जायेगी कि वे अपने प्रान्त में कार्यरत आर्य युवा संगठनों को और अधिक मजबूत करें तथा युवाओं को आगे आने का अवसर दें।

एक अन्य प्रस्ताव के द्वारा आर्य समाज के तेजस्वी नवयुवक श्री रामचन्द्र छत्रपति जो पाखण्ड के विरुद्ध आवाज बुलन्द करने के कारण शहीद हुए थे के हत्यारे डेरा सच्चा सौदा, सिरसा के मुखिया गुरमीत उर्फ राम रहीम एवं तीन अन्य हत्यारों को आजीवन कारावास होने पर संतोष व्यक्त किया गया। सभा में इस अति महत्त्वपूर्ण मुकदमें की विभिन्न विपरीत परिस्थितियों से जूझते हुए पैरवी करने वाले रामचन्द्र छत्रपति के बेटे अंशुल छत्रपति की मुक्त कंठ से प्रशंसा की गई तथा उन्हें पूरे आर्य जगत की ओर से इस संघर्ष में विजय प्राप्त करने के लिए बधाई दी गई। विदित हो कि श्री रामचन्द्र छत्रपति आर्य समाज के एक कर्मठ कार्यकर्ता एवं निर्भीक पत्रकार थे जिनको गुरमीत राम रहीम के डेरे में अत्याचार से पीड़ित महिलाओं की आवाज को अपने 'पूरा सच' पत्र में प्रकाशित करने के कारण गुरमीत ने अपने गुंडों से मरवा दिया था।

सार्वदेशिक सभा के उपमंत्री श्री रामसिंह आर्य की सुपुत्री मनीषा पंवार के जोधपुर शहर विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस की विधायक चुने जाने पर सभा की ओर से एक प्रस्ताव के द्वारा बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की गई। विदित हो कि गत राजस्थान विधानसभा के चुनाव में श्रीमती मनीषा पंवार जोधुपर शहर क्षेत्र से कांग्रेस पार्टी की विधायक चुनी गई हैं। उन्होंने 20 वर्ष बाद इस विधानसभा क्षेत्र में कांग्रेस को जीत दिलवाकर एक इतिहास रचा है। मनीषा के मुकाबले पर भाजपा ने एक ऐसे शेष पृष्ठ 5 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

28 जनवरी जयन्ती पर विशेष

स्वदेश, स्वधर्म तथा स्व-संस्कृति के लिए बलिदान होने वाले आर्य समाजी नेता लाला लाजपत राय

आर्यसमाज मेरी माता तथा स्वामी दयानन्द मेरे धर्मपिता हैं। मैंने देश सेवा का पाठ आर्य समाज से ही पढ़ा है।
– लाला लाजपत राय

सुप्रसिद्ध देशभक्त तथा भारत की आजादी के आन्दोलन के प्रखर नेता लाला लाजपतराय का नाम ही देशवासियों में स्फूर्ति तथा प्रेरणा का संचार करता है। उन्होंने वैश्य परिवार में जन्म लेकर क्षत्रियोचित गुण पाये थे। स्वदेश, स्वधर्म तथा स्वसंस्कृति के लिए उनमें जो प्रबल प्रेम तथा आदर था उसी के कारण वे स्वयं को राष्ट्र के लिए समर्पित कर अपना जीवन दे सके। भारत को स्वाधीनता दिलाने वाले महापुरुषों में उनका त्याग, बलिदान तथा देशभक्ति अद्वितीय और अनुपम थी, उनके बहुविध क्रियाकलाप में साहित्य लेखन एक महत्वपूर्ण आयाम है। वे उर्दू तथा अंग्रेजी के समर्थ रचनाकार थे।

बाल्यकाल : लालाजी का जन्म 28 जनवरी 1865 को अपने ननिहाल के गांव ढुंढिके (जिला फरीदकोट, पंजाब) में हुआ था। उनके पिता लाला राधाकृष्ण लुधियाना जिले के जगरांव कस्बे के निवासी अग्रवाल वैश्य थे।

लाजपतराय की शिक्षा पांचवें वर्ष में आरम्भ हुई। 1880 में उन्होंने कलकत्ता तथा पंजाब विश्वविद्यालय से एण्ट्रेंस की परीक्षा एक ही वर्ष में पास की और आगे पढ़ने के लिए लाहौर आये। यहां वे गवर्नमेंट कालेज में प्रविष्ट हुए और 1882 में एफ. ए. की परीक्षा तथा मुख्तारी (कानून) की परीक्षा साथ-साथ पास की। 1882 में ही वे लाहौर रहते हुए आर्यसमाज के सम्पर्क में आये और उसके सदस्य बन गये। डी. ए. वी. कालेज लाहौर के प्रथम प्राचार्य लाला (आगे चल कर महात्मा के नाम से प्रसिद्ध) हंसराज तथा प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् पं. गुरुदत्त उनके सहपाठी थे, जिनके साथ उन्हें आगे चलकर आर्यसमाज का कार्य करना पड़ा। इनके द्वारा ही उन्हें महर्षि दयानन्द के विचारों का परिचय मिला था।

30 अक्तूबर, 1883 को जब अजमेर में ऋषि दयानन्द का देहान्त हो गया तो 9 नवम्बर, 1883 को लाहौर आर्यसमाज की ओर से एक शोक सभा का आयोजन किया गया। इस सभा के अन्त में यह निश्चय हुआ कि स्वामी जी की स्मृति में एक ऐसे महाविद्यालय की स्थापना की जाये, जिसमें वैदिक साहित्य, संस्कृत तथा हिन्दी की उच्च शिक्षा के साथ-साथ अंग्रेजी और पाश्चात्य ज्ञान विज्ञान में भी छात्रों को दक्षता प्राप्त कराई जाये। 1886 में जब इस शिक्षण संस्था की स्थापना हुई तो आर्य समाज के अन्य नेताओं के साथ लाला लाजपतराय का भी इसके संचालन में महत्वपूर्ण योगदान रहा तथा वे कालान्तर में डी. ए. वी. कालेज लाहौर के महान् स्तम्भ बने।

वकालत के क्षेत्र में :- लाला लाजपतराय ने एक मुख्तान (छोटा वकील) के रूप में अपने मूल निवास स्थान जगरांव में ही वकालत आरम्भ कर दी थी, किन्तु यह कस्बा बहुत छोटा था, जहाँ उनके कार्य के बढ़ने की अधिक सम्भावना नहीं थी। अतः वे रोहतक चले गये। रोहतक रहते हुए ही उन्होंने 1885 में वकालत की परीक्षा उत्तीर्ण की 1886 में वे हिसार आ गये। एक सफल वकील के रूप में 1892 तक वे यहीं रहे और इसी वर्ष में वे लाहौर आये तब से लाहौर ही उनकी सार्वजनिक गतिविधियों का केन्द्र बन गया। लालाजी ने यों तो समाज सेवा का कार्य हिसार में रहते हुए ही आरम्भ कर दिया था, जहां उन्होंने लाला चंदूलाल, पं. लखपतराय और लाला चूड़ामणि जैसे आर्यसमाजी कार्यकर्ताओं के साथ सामाजिक हित की योजनाओं के क्रियान्वयन में योगदान किया, किन्तु लाहौर आने पर वे आर्य समाज के अतिरिक्त राजनैतिक आन्दोलन के साथ जुड़ गये। 1888 में वे प्रथम बार कांग्रेस के इलाहाबाद अधिवेशन में सम्मिलित हुए जिसकी अध्यक्षता मि0 जार्ज यूल ने की थी। 1907 में वे पं0 गोपाल कृष्ण गोखले के साथ कांग्रेस के एक शिष्टमण्डल के सदस्य के रूप में इंग्लैण्ड गये। यहां से वे अमेरिका चले गये। उन्होंने एकाधिक बार विदेश यात्रायें की और वहां रह कर पश्चिमी देशों के समक्ष भारत की राजनैतिक परिस्थिति की वास्तविकता से वहां के लोगों को परिचित कराया तथा उन्हें स्वाधीनता आन्दोलन की जानकारी दी।

लाला लाजपतराय ने अपने सहयोगियों लोकमान्य तिलक तथा विपिन चन्द्र पाल के साथ मिलकर कांग्रेस में उग्र विचारों का प्रवेश कराया। 1885 में अपनी स्थापना से लेकर लगभग बीस वर्षों तक कांग्रेस ने एक राजभक्त संस्था का चरित्र बनाये रक्खा था। इसके नेतागण वर्ष में एक बार बड़े दिन की छुट्टियों में देश के किसी नगर में एकत्रित होते और विनम्रतापूर्वक शासन के सूत्रधारों (अंग्रेजों) से सरकारी उच्च सेवाओं में भारतीयों को अधिकाधिक संख्या में प्रविष्ठ करने की याचना करते। वे कभी-कभी औपनिवेशिक स्वराज्य की बात भी करते थे। उनदिनों कांग्रेस के अधिवेशनों की समाप्ति 'गॉड सेव दि किंग' के गाान के साथ होती थी। 1905 में जब बनारस में सम्पन्न हुए कांग्रेस के अधिवेशन में ब्रिटिश युवराज के भारत आगमन पर उनका स्वागत करने का प्रस्ताव आया तो लालाजी ने उसका डट कर विरोध किया। यों समझना चाहिएकि उस भाषण सेही कांग्रेस में गरम दल की नींव पड़ गई। कांग्रेस के मंच से यह अपनी किस्म का पहला तेजस्वी भाषण हुआ जिसमें देश की अस्मिता प्रकट हुई थी। इसे सुनकर अध्यक्ष पं. गोपालकृष्ण गोखले के दोनों ओर बैठे कांग्रेस के वयोवृद्ध नेता और विशेषतः मुम्बई के प्रतिनिधि तो कांपने लगे, डर से उनके चेहरे पीले पड़ गये। 1907 में जब पंजाब के किसानों में अपने अधिकारों को लेकर चेतना उत्पन्न हुई तो सरकार का क्रोध लाला जी तथा सरदार अजीतसिंह (शहीद भगतसिंह के चाचा) पर उमड़ पड़ा और इन दोनों देशभक्त नेताओं को देश से निर्वासित कर उन्हें पड़ौसी देश बर्मा के मांडले नगर में नजरबंद कर दिया। देशवासियों द्वारा सरकार के इस दमनपूर्ण कार्य का प्रबल विरोध किया गया और विवश होकर सरकार को अपना यह आदेश वापिस लेना पड़ा। लालाजी पुनः स्वदेश आये और देशवासियों ने उनका भावभीना स्वागत किया। लाला जी के राजनैतिक जीवन की कहानी अत्यन्त रोमांचक तो है ही, भारतवासियों को स्वदेशहित के लिए बलिदान तथा महान् त्याग करने की प्रेरणा भी देती है।

जन सेवा के कार्यः- लालाजी केवल राजनैतिक नेता और कार्यकर्ता ही नहीं थे। उन्होंने जनसेवा का भी सच्चा पाठपढ़ा था। जब 1896 तथा 1899 (इसे राजस्थान में छप्पन का अकाल कहते हैं, क्योंकि यह विक्रम का 1956 का वर्ष था) में उत्तर भारत में भयंकर अकाल पड़ा तो लाला जी ने अपने साथी लाला हंसराज के सहयोग से अकाल पीड़ित लोगों को सहायता पहुंचाई। जिन अनाथ बच्चों को ईसाई पादरी अपनाने के लिए तैयार थे और अन्ततः जो उनका धर्म परिवर्तन करने का इरादा रखते थे। उन्हें इन मिश्नरियों के चंगुल से बचा कर उन्हें फिरोजपुर तथा आगरा के आर्य अनाथालयों में भेजा। 1905 में कांगड़ा (हिमांचल प्रदेश) में भयंकर भूकम्प आया?। इस समय भी लालाजी सेवा कार्य में जुट गये और डी. ए. वी. कालेज, लाहौर के छात्रों के साथ भूकम्प पीड़ितों को रहात प्रदान की। 1907-08 में उड़ीसा मध्य प्रदेश तथा संयुक्त प्रान्त (वर्तमान उत्तर प्रदेश) में भी भयंकर दुर्भिक्ष पड़ा और लालाजी को पीड़ितों की सहायता के लिए आगे आना पड़ा।

पुनः राजनैतिक आन्दोलन मेंः- 1907 सूरत के प्रसिद्ध कांग्रेस अधिवेशन में लाला लाजपतराय ने अपने सहयोगियों के द्वारा राजनीति में गरम दल की विचारधारा का सूत्रपात कर दिया था और जनता को यह विश्वास, दिलाने में सफल हो गये थे कि केवल प्रस्ताव पास करने और गिड़गिड़ाने से स्वतंत्रता मिलने वाली नहीं है। हम यह देख चुके हैं कि जन-भावना को देखते हुए अंग्रेजों को उनके देश निर्वासन को रद्द करना पड़ा था। वे स्वदेश आये और पुनः स्वाधीनता के संघर्ष में जुट गये। प्रथम विश्वयुद्ध 1914-1918 के दौरान वे एक प्रतिनिधि मण्डल के सदस्य के रूप में पुनः इंग्लैण्ड गये और देश की आजादी के लिए प्रबल जनमत जागृत किया। वहां से वे जापान होते हुए अमेरिका वासियों के समक्ष भारत की स्वाधीनता का पक्ष प्रबलता से प्रस्तुत किया। यहां उन्होंने इण्डियन होमरूललीग की स्थापना की तथा कुछ ग्रन्थ भी लिखे। 20 फरवरी, 1920 को जब वे स्वदेश लौटे तो अमृतसर में जलियां वाला बाग काण्ड हो चुका था और सारा राष्ट्र असन्तोष तथा क्षोभ की ज्वाला में जल रहा था। इसी बीच महात्मा गांधी ने असहायोग आन्दोलन आरम्भ किया तो लालाजी पूर्ण तत्परता के साथ इस संघर्ष में जुट गये। 1920 में ही वे कलकत्ता में आयोजित कांग्रेस के विशेष अधिवेशन के अध्यक्ष बने। उन दिनों सरकारी शिक्षण संस्थाओं के बहिष्कार, विदेशी वस्त्रों के त्याग, अदालतों का बहिष्कार शराब के विरुद्ध आन्दोलन, चरखा और खादी का प्रचार जैसे कार्यक्रमों को कांग्रेस ने अपने हाथ में ले रक्खा था, जिसके कारण जनता में एक नई चेतना का प्रादुर्भाव हो चला था। इसी समय लालाजी को कारावास का दण्ड मिला, किन्तु खराब स्वास्थ्य के कारण वे जल्दी ही रिहा कर दिये गये।

1924 में लालाजी कांग्रेस के अन्तर्गत ही बनी स्वराज पार्टी में शामिल हो गये और केन्द्रीय धारा सभा (सैण्ट्रल असेम्बली) के सदस्य चुन लिये गये। जब उनका पं. मोतीलाल नेहरू से कतिपय राजनैतिक प्रश्नों पर मतभेद हो गया तो उन्होंने नेशनलिस्ट पार्टी का गठन किया और पुनः असेम्बली में पहुंच गये। अन्य विचारशील नेताओं की भांति लालाजी भी कांग्रेस में दिन-प्रतिदिन बढ़ने वाली मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति से अप्रसन्नता अनुभव करते थे, इसलिए स्वामी श्रद्धानन्द तथा पं. मदनमोहन मालवीय के सहयोग से उन्होंने हिन्दू महासभा के कार्य को आगे बढ़ाया। 1925 में उन्हें हिन्दू महासभा के कलकत्ता अधिवेशन का अध्यक्ष भी बनाया गया। ध्यातव्य है कि उन दिनों हिन्दू महासभा का कोई स्पष्ट राजनैतिक कार्यक्रम नहीं था और वह मुख्य रूप से हिन्दू संगठन अछूतोद्धार, शुद्धि जैसी सामाजिक कार्यक्रमों में ही दिलचस्पी लेती थी। इसी कारण कांग्रेस से उसका थोड़ा सा भी विरोध नहीं था।

यद्यपि संकीर्ण दृष्टि के अनेक राजनैतिक कर्मी, लालाजी के हिन्दू महासभा में रुचि लेने से नाराज भीहुए किन्तु उन्होंने इसकी कभी परवाह नहीं की और वे अपने कर्त्तव्यपालन में ही लगे रहे।

जीवन सन्ध्याः- 1928 में जब अंग्रेजों द्वारा नियुक्त साइमन कमीशन भारत आया तो देश के नेताओं ने उसका बहिष्कार करने का निर्णय लिया। 30 अक्टूबर, 1928 को कमीशन लाहौर पहुंचा तो जनता के प्रबल प्रतिरोध को देखते हुए सरकार ने धारा 144 लगा दी। लालाजी के नेतृत्व में नगर के हजारों लोग कमीशन के सदस्यों को काले झण्डे दिखाने के लिए रेलवे स्टेशन पहुंचे और 'साइमन वापस जाओ' के नारों से आकाश गुंजा दिया। इस पर पुलिस को लाठी चार्ज का आदेश मिला। इसी समय अंग्रेज सार्जेंट साण्डर्स ने लालाजी की छाती पर लाठी का प्रहार किया जिससे उन्हें सख्त चोट पहुंची। उसी सायं लाहौर की एक विशाल जनसभा में एकत्रित जनता को सम्बोधित करते हुए नरकेसरी लालाजी ने गर्जना करते हुए कहा- मेरे शरीर पर पड़ी लाठी की प्रत्येक चोट अंग्रेजी साम्राज्य के कफन की कील का काम करेगी। इस दारुण प्रहार से आहत लालाजी ने अठारह दिन तक विषम ज्वर की पीड़ा भोग कर 17 नवम्बर, 1928 को परलोक के लिए प्रस्थान किया।

बहुआयामी व्यक्तित्वः- लाला लाजपतराय का व्यक्तित्व बहुआयामी था। वे एक साथ ही उत्कृष्ट वक्ता, श्रेष्ठ लेखक, सार्वजनिक कार्यकर्ता, सेवाभावी समाज सेवक, राजनैतिक नेता, शिक्षा शास्त्री, चिन्तक, विचारक तथा दार्शनिक थे। आर्य सामज से ही उन्होंने देश सेवा का पाठ पढ़ा था और स्वामी दयानन्द से उन्होंने समर्पण तथा सेवा का आदर्श ग्रहण किया था। उनके शब्दों में आर्यसमाज मेरी माता तथा स्वामी दयानन्द मेरे धर्मपिता हैं। मैंने देश सेवा का पाठ आर्य समाज से ही पढ़ा है। लालाजी के बलिदान के पश्चात् देशबंधु चितरंजनदास की पत्नी श्रीमती बसन्ती देवी ने एक वक्तव्य प्रसारित कर कहा था कि क्या देश में कोई ऐसा क्रांतिकारी युवक नहीं है जो भारत केसरी लालाजी की मौत का बदला ले सके।

जब यह बात सरदार भगतसिंह तक पहुँची तो उसने लालाजी पर लाठियों का प्रहार करने वाले साण्डर्स को मार कर उस अमर देशभक्त की मौत का बदला ले लिया। लाला लाजपतराय देश के स्वाधीनता संग्राम के महान् सेनानी थे। देशवासी उनके त्याग और बलिदान को सदा स्मरण रखेंगे।

सच्चरित्रता की पक्की नींव धर्म

– आचार्य श्रवण कुमार (व्याकरण दर्शनाचार्य)

सभी सच्चे धर्मनिष्ठ लोगों में सद्गुण प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। ऋषि दयानन्द, महात्मा बुद्ध, शंकराचार्य, गुरुनानक, सन्त कबीर, गुरु रामदास इत्यादि महापुरुषों में सद्गुणों की मात्रा इतनी अधिक दिखाई देती है कि साधारण व्यक्ति उसे देखकर आश्चर्यचकित हो जाते हैं। इस प्रकार के धर्मशील महापुरुष अपने प्रभाव से सर्वसाधारण जनता के चारित्रिक मानदण्ड को भी बहुत ऊँचा कर देते हैं। इस प्रकार जनता में चारित्रिक गुण उत्पन्न करने की दृष्टि से धर्म का बड़ा ऊँचा और महत्त्वपूर्ण स्थान है।

धर्म और ईश्वर का विरोध करने वाले लोग कहते हैं कि धर्म को मानने की क्या आवश्यकता है? धर्म को मानने वाले लोग धर्म का यही तो लाभ बताते हैं कि उससे हमारे अन्दर सत्य, न्याय, दया, तप, त्याग और उपकार आदि चरित्र सम्बन्धी सद्गुण उत्पन्न होते हैं। हम इन चरित्र सम्बन्धी सद्गुणों को अपने भीतर धर्म के बिना भी उत्पन्न कर सकते हैं। अनेक नास्तिक लोगों में ये सद्गुण बड़ी ऊँची मात्रा में पाए जाते हैं। हम अपने व्यवहार में इन सद्गुणों का पालन करते रहेंगे। हमें धर्म को मानकर आत्मा, परमात्मा, लोक, परलोक और कर्मफल आदि के जंजाल में पड़ने की क्या आवश्यकता है?

धर्म विरोधियों का यह कथन ऊपर–ऊपर से सुनने में रोचक प्रतीत होता है। गहराई में विचार करने पर पता चलता है कि धर्म को माने बिना, आत्मा–परमात्मा की सत्ता और लोक–परलोक तथा कर्मफल के सिद्धान्त को मानें बिना चरित्र सम्बन्धी सद्गुण खड़े नहीं रह सकते। हमारी सच्चरित्रता आत्मा–परमात्मा और लोक–परलोक तथा कर्मफल के सिद्धान्त के आधार पर ही टिकी हुई है।

यदि हम नास्तिक लोगों की बातें मानकर भौतिकवादी बन जाएँ और यह मानने लग पड़े कि आत्मा नाम की कोई सत्ता नहीं है, जिसे हम आत्मा कहते हैं वह तो प्राकृतिक जड़ पदार्थों के संयोग का परिणाम है, जिस प्रकार आग और पानी के संयोग का परिणाम जल की उष्णता है। अथवा जैसे पोटैशियम फैरो साइनाइड के हल्के पीले से रंग के घोल में फैरिक क्लोराइड का हल्के पीले से रंग के घाल मिला देने से उसमें गहरा नीला रंग आ जाता है। हमारे उत्पन्न होने से पूर्व हमारा आत्मा नहीं था, और हमारे मर जाने के बाद न कोई अगला जन्म होगा, बस जो कुछ है यह हमारा वर्तमान जन्म ही है। इस जन्म में हम जो कुछ कर लें, कर लें, इस जन्म में हम जो कुछ सुख भोग भोगना चाहें भोग लें, आगे कुछ नहीं होने और मिलने वाला है, आँख मिची और सब कुछ समाप्त, भौतिकतावादी नास्तिक बनकर यदि हम मानने लग पड़े कि परमात्मा की भी सत्ता कुछ नहीं है – इस जगत् को बनाने वाला और चलाने वाला तथा हमारे कर्मों का फल देने वाला परमात्मा कोई नहीं है तो हमारी सच्चरित्रता ठहर नहीं सकेगी।

जब हमारा केवल यही जन्म है और इसी में हम जो कर लें और जो सुख भोग भोगना चाहें भोग लें, तो हममें बुरे कर्मों से बचने की प्रवृत्ति नहीं होगी। तब हमारे अन्दर यह प्रवृत्ति जाग उठेगी कि यह थोड़ा सा तो समय हमारे पास है जिसमें हम जो सुख भोगना चाहें भोग सकते हैं, इसीलिए जिस किसी तरह भी हमें अपने जीवन को सुखी बनाकर रखना चाहिए। इस प्रवृत्ति के वश में आकर हम अपने जीवन को सुखी बनाने के लिए बुरे कर्म करने से रोक नहीं पायेंगे। बुरे कर्मों का दण्ड देने वाला परमात्मा तो कोई है ही नहीं, जिसका हमें भय रहे। अगला जन्म भी कोई नहीं है जिसमें हमें बुरे कर्मों का फल भोगना पड़े। तो हमें बुरे कर्मों से बचकर सच्चरित्र बनने की प्रेरणा क्यों होगी?

आत्मा–परमात्मा की सत्ता, पुनर्जन्म और कर्मफल के सिद्धान्त को न मानकर केवल यही एक जन्म मानने की व्यवस्था में तो हमारा उद्देश्य केवल अपने इस वर्तमान जीवन को सुखी बनाना रह जायेगा। हमें अपने जीवन को सुखी बनाने के लिए झूठ–फरेब, धोखे–धड़ी और अन्याय–अत्याचार का भी अवलम्बन करना पड़े तो वह कर लेना चाहिए। इस प्रकार के दुराचरणों से हमें क्यों रुकना चाहिए?

कहा जा सकता है कि जैसे हम सुखी बनना चाहते हैं वैसे ही और लोग भी सुखी बनना चाहते हैं। इसलिए झूठ–फरेब आदि का सहारा लेकर हमें दूसरों के जीवन को दुःखी नहीं बनाना चाहिए। परन्तु यदि कोई अपनी यह मनोवृत्ति बना ले कि दूसरे लोग मेरे किसी आचरण से दुःखी होते हैं तो होते रहें, मुझे तो अपने जीवन को सुखी बनाना है। मैं तो जैसे भी होगा अपने को सुखी बनाऊँगा। तो ऐसी मनोवृत्ति वाले व्यक्ति को दुराचरण से कैसे रोका जा सकता है? कहा जा सकता है कि दूसरे लोग उसके दुर्व्यवहारों से तंग आकर उसे पकड़ लेंगे और दण्डित करेंगे और इस प्रकार उसे अपने बुरे कर्मों का फल दुःख मिलेगा, अतः उसे बुरे कर्मों से बचने की सीख स्वयं मिल जायेगी कि उसे बुरे कर्मों से बचना चाहिए। परन्तु पकड़ में तो कोई व्यक्ति अपनी असावधानी और गलती से आता है। यदि कोई व्यक्ति पूर्ण सावधान होकर चतुराई और बुद्धिमत्ता से दूसरों के साथ दुर्व्यवहार करके अपने को सुखी बनाता रहे तो ऐसे व्यक्ति को दुराचरण से कैसे रोका जा सकेगा? फिर यदि कोई यह सोच ले कि कभी अपनी असावधानी से पकड़ भी लिया गया और उससे दण्डित होकर कुछ दुःख भोगना भी पड़ गया तो क्या बात है? अधिकतर तो मैं दूसरों को ठग और लूटकर अपने जीवन को सुखी ही रखता हूँ, तो ऐसे व्यक्ति को दुराचरण से कैसे रोका जा सकेगा? यदि हम छिपकर पाप करते हैं? उससे तो हम अपने जीवन को सुखी बना रहे हैं। आत्मा–परमात्मा की सत्ता, पुनर्जन्म और कर्मफल के सिद्धान्त को न मानने वाले भौतिकवादी नास्तिकों के पास इन प्रश्नों का कोई समाधान नहीं है।

आत्मा–परमात्मा आदि की सत्ता को स्वीकार न करने की अवस्था में तो मनुष्य की प्रवृत्ति स्वभावतः चार्वाकों की सी हो जायेगी और वह चार्वाकों के स्वर में स्वर मिलाकर कहने लगेगा – 'मौत से कोई भी बच नहीं सकता इसलिए जब तक जीना है सुख से जीना चाहिए। क्योंकि मरने के बाद जलकर राख हो जाने के पीछे सुख भोगने के लिए शरीर कहाँ से मिलेगा? जब तक जीना है सुख से जीना चाहिए और अपने को सुखी बनाने के लिए ऋण लेकर भी घी पीते रहना चाहिए।

फिर एक बात और यहाँ विचारने की है। आत्मा और परमात्मा को न मानने की अवस्था में अच्छे और बुरे, सच्चारित्रय का भेद कैसे किया जा सकेगा? हमारे किसी कर्म को अच्छा या बुरा कहकर उसकी अच्छाई और बुराई का निर्माण करने वाला कोई परमात्मा या आत्मा तो है ही नहीं। भौतिकवादी नास्तिकों के मत में परमात्मा की सत्ता तो बिल्कुल ही नहीं है। आत्मा की भी वास्तविक सत्ता नहीं है। आत्मा या चेतना जो कुछ है केवल प्राकृतिक जड़ पदार्थों के एक विशेष प्रकार के संयोग का परिणाम है। जिस प्रकार आग और जल के एक विशेष संयोग का परिणाम जल की उष्णता है। ऐसी अवस्था में, जिस प्रकार जल की उष्णता प्राकृतिक होने के कारण जड़ ही है, उसी प्रकार हमारे शरीर के प्राकृतिक जड़ पदार्थों के संयोग का परिणाम होने के कारण प्राकृतिक होने से हमारा आत्मा भी वस्तुतः जड़ ही है, ऐसा हमें मानना पड़ेगा और हमें यह भी मानना पड़ेगा कि यह हमारा आत्मा कोई पृथक पदार्थ नहीं, हमारे शरीर के प्राकृतिक पदार्थों में रहने वाला उन पदार्थों का एक गुणमात्र है। तो जिस आत्मा की कोई पृथक् सत्ता ही नहीं है, जो हमारे शरीर के प्राकृतिक जड़ पदार्थों का ही एक गुणमात्र है और जड़ है, वह आत्मा हमारे कर्मों की अच्छाई और बुराई का निर्णय किस प्रकार कर सकेगा? इस प्रकार हमारे कर्मों की अच्छाई या बुराई का निर्णय करने वाली कोई सत्ता न होने के कारण, हमारे कोई भी कर्म अच्छे या बुरे नहीं रहेंगे। हमारे सभी कर्म एक जैसे ही हो जायेंगे। हम जैसा चाहें कर लें। हम किसी के किसी कर्म को दुराचरण या अनैतिक और सदाचरण या नैतिक नहीं कह सकेंगे।

इसलिए धर्म के बिना सच्चरित्रता की नींव खड़ी नहीं रह सकती। धर्म आत्मा को भी मानता है और परमात्मा को भी। आत्मा अपनी स्वतन्त्रता से अच्छे या बुरे कर्म करता है। अपने कर्मों का फल भोगने में आत्मा परमात्मा के अधीन है। बुरे कर्मों का फल आत्मा को परमात्मा की व्यवस्था के अधीन रहकर दुःख के रूप में भोगना पड़ता है, और अच्छे कर्मों का फल सुख के रूप में। परमात्मा की व्यवस्था के अधीन रहकर कर्मों का फल आवश्यक रूप से कर्मफल भोग से आत्मा बच नहीं सकता है। कर्मफल प्रदाता परमात्मा की व्यवस्था के अधीन रहकर कर्मों का फल आवश्यक रूप से भोगे जाने का यह सिद्धान्त आत्मा को बुरे कर्मों से दूर रहने की प्रेरणा करता है। धर्म में परलोक और पुनर्जन्म के सिद्धान्त को भी माना जाता है। यदि इस जन्म में हमें परमात्मा ने हमारे कर्मों का फल दुःख के रूप में नहीं दिया है तो अगले जन्म में दिया जायेगा, उससे छूट नहीं सकते, अगले जन्म में भी फल मिल सकने का यह सिद्धान्त हमारे मन में बुरे कर्मों के प्रति और भी अधिक भय उत्पन्न कर देता है। कर्मफल भोग के इस भय के कारण हम दुराचरणों से बच कर सदाचरण से रहने का प्रयत्न करने लगते हैं। ऐसा करते–करते हम स्वभाव से ही अच्छे आचरण करने वाले बन जाते हैं। परमात्मा के भय के कारण बुरे कर्मों से बचे रहने की बात हमारे मन की पृष्ठभूमि में बहुत गहराई से बैठी रहती है। धर्म सृष्टि के आरम्भ से इस प्रकार हमें सच्चारित्र्य सिखाता आ रहा है।

धर्म द्वारा की जाने वाली अपनी इस सेवा के कारण संसार को धर्म का धन्यवाद करना चाहिए। जिस दिन संसार से धर्म को सर्वथा मिटा दिया जायेगा, जिस दिन लोग आत्मा, परमात्मा, लोक और परलोक को मानना सर्वथा छोड़ देंगे, जिस दिन कर्मफल भोग के सिद्धान्त में लोगों का विश्वास बिल्कुल नहीं रहेगा, जिस दिन परमात्मा की भक्ति द्वारा परमात्मा के गुणों को अपने भीतर धारण करने वाले धर्मनिष्ठ लोग सर्वथा पैदा होना बन्द हो जायेंगे, उस दिन के थोड़े समय के पश्चात् संसार से सच्चरित्रता समाप्त हो जायेगी। आज संसार के लोगों में जितनी सच्चरित्रता दिखती है उसका मूल स्रोत धर्म ही है।

नास्तिक लोगों में जो कुछ सच्चरित्रता दिखाई पड़ती है उसका मूल स्रोत भी धर्म ही है। धर्म द्वारा सिखाए गए, परम्परा से चले आ रहे सच्चरित्रता के तत्त्वों को नास्तिक लोगों ने भी स्वीकार कर लिया है। जैसे गंगा से निकली हुई नहर में से निकली हुई अन्य नहर बहुत दूर के खेतों में जाकर पानी दे देती है और उन खेतों और उनके किसानों को पता नहीं होता कि यह पानी गंगा का है, इसी प्रकार नास्तिकों को भी पता नहीं है उनमें जो सच्चरित्रता है वह मूल रूप में धर्म की गंगा से ही निकलती है। नास्तिकता का दर्शनशास्त्र, जैसा ऊपर दिखाया गया है, स्वयं सच्चरित्रता को जन्म नहीं दे सकता।

जब धर्म नहीं रहेगा तो सच्चरित्रता भी नहीं रहेगी और संसार में अन्धपरम्परा चल पड़ेगी। कोई किसी को सन्मार्ग न दिखा सकेगा। तब संसार के लोगों में मात्स्य – न्याय चलने लगेगा। जैसे बड़ी मछली छोटी मछली को खा जाती है वैसे ही शक्तिशाली लोग दुर्बल लोगों को खाने लग पड़ेंगे। उस घोर अधर्म की अवस्था में न स्वतन्त्रता रहेगी और न किसी राष्ट्र की किसी प्रकार कोई उन्नति।

परन्तु संसार यह सुनकर निश्चिन्त रहे कि राम, कृष्ण, दयानन्द, विवेकानन्द, महात्मा गांधी जैसे महापुरुष धर्मनिष्ठ लोगों के समय–समय पर जन्म लेते रहने के कारण वह बुरा दिन कभी न आने पायेगा। धर्म को नास्तिकवाद से भय नहीं है। आत्मा–परमात्मा की सत्ता और पुनर्जन्म तथा कर्मफल के सिद्धान्त को सिद्ध करने के लिए धर्मवालों के पास प्रबल तर्क हैं। पहले भी नास्तिक लोग आते रहे हैं। हम आस्तिक लोग अपने तर्कों से उनकी बातों का खण्डन करते रहे हैं।

यहाँ एक बात और भी देखने की है। सच्चरित्र रहने के लिए हमें सच्चरित्र पुरुषों की संगति की आवश्यकता पड़ती है। अच्छी बुरी जैसी संगति में रहा करते हैं वैसे बन जाया करते हैं। संसार में हमें पूर्ण सच्चरित्र पुरुषों की संगति प्रायः प्राप्त नहीं होती। धर्म इस सम्बन्ध में भी हमारी सहायता करता है। परम पुरुष परमात्मा की उपासना व भक्ति करके सबसे अधिक सच्चरित्र सत्ता की संगति प्राप्त होती है। उपासना द्वारा प्रभु की संगति में बैठे रहने से हमारे अन्दर चरित्र सम्बन्धी सब सद्गुण आ जाते हैं।

इस प्रकार विचार करने से यही निष्कर्ष निकलता है कि बिना धर्म के सच्चरित्रता की दीवाल खड़ी नहीं हो सकती। किसी भी दृष्टि से हम देखें, अन्ततः हमें सच्चरित्रता का आधार धर्म को ही मानना पड़ेगा। धर्म की वृद्धि सच्चरित्रता की वृद्धि है। धर्म की हानि सच्चरित्रता की हानि है। सच्चरित्रता की वृद्धि से ही समाज में सुख शान्ति की स्थापना होगी, परस्पर एक दूसरे की उन्नत्यर्थ मनुष्य अग्रसर होंगे। इसलिए हम सभी को चाहिए कि धर्म की वृद्धि के लिए मन–तन–धन से समर्पित होकर सच्चरित्रता नींव के मजबूत पत्थर बनकर अपनी कर्त्तव्य पारायणता का परिचय दें।

– 'पाणिनि महाविद्यालय' रेवली, सोनीपत

गरिमामय गणतंत्र हमारा

– डॉ. राम बहादुर 'व्यथित'

देश की समृद्धि का रथ तीव्र गति से अग्रसर है। हम व्यक्तिगत अथवा दलगत मतभेदों को भुलाकर, द्वेष भाव त्यागकर इस पवित्र यज्ञ में भाग लें। जिन शहीदों ने स्वाधीनता के प्रहरी बनकर अपना सर्वस्व होम किया है उन हुतात्माओं को हम प्रणाम करें तथा उनकी शहादत का मूल्य चुकाने के लिए उनके पवित्र पथ का अनुगमन करें। भारत के भव्य गणतंत्र का रूप सजाने और संवारने हेतु हम त्याग, तपस्या और सहिष्णुता का पथ अपनायें। यदि हमने लाखों–करोड़ों की सम्पत्ति अर्जित कर ली है तो यह सम्पत्ति यहीं छूट जायेगी। स्वर्गारोहण के समय केवल धर्म हमारे साथ होगा। त्याग, बलिदान और समर्पण करने वाले कर्मवीर मृत्यु के बाद भी याद किये जाते हैं। आईये! हम भी कुछ ऐसा कर दिखाएं कि आने वाली पीढ़ियाँ हमें आदर और श्रद्धा के साथ स्मरण करें।

भूमण्डल का विशालतम गणतंत्र, विश्व का गरिमामय लोकतंत्र संसार का सर्वाधिक बृहद संविधान, जन–जन को समरूप महिमा मण्डित करने वाली न्याय परक आचार संहिता, समाज के दलित और पिछड़े वर्ग के अभ्युत्थान के लिए संकल्पित विशाल विधिकोश, जन साधारण की सेवा सुरक्षा और उनके सर्वांगीण उत्थान के लिए संकल्पबद्ध प्रारूप महान शिक्षाविद् इतिहासवेत्ता डॉ. राजेन्द्र प्रसाद दलितों के मसीहा डॉ. भीमराव अम्बेडकर तथा राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन जैसे महापुरुषों की विद्वन्मण्डली ने लोक कल्याणकारी संविधान की रचना की, जिसे 26 जनवरी, 1950 को भारत ने पूर्ण निष्ठा से अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित किया और भारत ने विशाल गणराज्य की स्थापना की। सुनहरे स्वप्न देखे थे उस विद्वन्मण्डली ने जिसे संविधान की भाषा में 'संविधान निर्मात्री सभा' कहा जाता है। जन–जन के मन में आशा का सूर्य उदित हुआ.. हर्षातिरेक से नाच उठा हर उदास मन... अब भारत बहुमुखी प्रगति करेगा, जन–जन के कष्ट दूर होंगे। प्रत्येक असहाय को सहारा मिलेगा, बेरोजगारों को रोजगार मिलेगा, स्वराज्य की स्थापना होगी, देश प्रत्येक क्षेत्र में समृद्ध होगा, आत्मनिर्भर और स्वावलम्बी बनेगा, बकरी और शेर एक घाट पर निःशंक होकर पानी पियेंगे, सभी को न्याय मिलेगा.... सच, महात्मा गाँधी ने जिस रामराज्य के सपने दिखाये थे... वह भारत ऐसा ही समृद्ध खुशहाल और न्याय प्रिय देश था... उस स्वप्न के अनुसार

त्याग, संपर्क और सेवा की मूर्ति होंगे हमारे कर्णधार प्रजा के सच्चे अनुरंजक प्रजा के हित चिन्तक, देशोद्धारक जनता के निःस्वार्थ सेवक, निर्भीक, तेजस्वी और ऊर्जावान प्रतिनिधि जो देश की डूबती हुई नौका को पार लगायेंगे। अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देंगे, भारतमाता की पुष्कल समृद्धि के लिए।

कालचक्र निस्सीम है। दशक व्यतीत होते गये। महात्मा गाँधी, पं. जवाहर लाल नेहरू, सरदार पटेल, सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन, अबुल कलाम आजाद, रफी अहमद किदवई और लाल बहादुर शास्त्री जैसे विभूतियाँ इस असार संसार से विदा हो गई। राष्ट्रमूर्ति इंदिरा प्रियदर्शनी तथा राजीव गाँधी के बलिदान के बाद मानो त्याग और समर्पण का अध्याय ही समाप्त हो गया। भूख पेट में खाँव–खाँव करने लगी। मन–मस्तिष्क पर स्वार्थ की मोटी परत जम गई। देश की समृद्धि को घोटालों का ग्रहण लगने लगा। राजपुरुषों की हया और शर्म मानों बर्फ की मानिन्द पिघल कर पानी हो गई। एक के बाद एक घोटाला बोफोर्स काण्ड यूरिया काण्ड तेलगी काण्ड जैन बन्धु डायरी ताज कोरिडोर काण्ड, टू जी स्पैक्ट्रम घोटला, व्यापम घोटला और धीरे–धीरे देश इन घोटालों की नजर हो गया राजपुरुषों की आस्था स्वदेश से विचलित होकर स्विस बैंक में केन्द्रित हो गयी। देश की अस्मिता इतनी गिर गई कि भारत के रक्षामंत्री के विदेश पहुँचने पर उनके वस्त्र उतार कर तलाशी ली गई। पाकिस्तान के राष्ट्राध्यक्ष के शुभागमन पर भारत में आगरा को इन्द्रलोक बनाने में करोड़ों की धनराशि पानी की तरह बहा दी। दूसरी ओर भारत के रक्षामंत्री के विदेश पहुँचने पर ऐसा भर्त्सनापूर्ण व्यवहार।

कहाँ गया भारत का वह मार्तण्ड सा चमकता भाल? क्या इतने वर्षों की स्वाधीनता का यही प्रसाद है? यही अनमोल पूंजी हम अर्जित कर पाये इस दीर्घ अन्तराल में? कहीं जघन्य अपराधों में लिप्त मंत्रीगण। कहीं मैच फिक्सिंग में लिप्त यशस्वी खिलाड़ी कहीं विश्वविद्यालयों से 'आउट' होते प्रश्न पत्र कहीं कुख्यात अपराधियों पर 'पोटा' का कलंक और फिर टिनोपाल से वह कलंक धोकर उसी व्यक्ति को मंत्री पद पर अभिषित किया जाना। धन्य है यह लोकतंत्र। विशाल गणतंत्र की दुर्भेद्य अनबूझ पहेलियाँ।

धूल में मिल गये वे सुनहरे स्वप्न जो संविधान निर्मात्री सभा ने संजोये थे। उनका आदर्श था सच्चरित्र, दुग्ध धवल आचरण वाले देश भक्त निर्वाचित होकर सदन में पहुँचेंगे। परखच्चे उड़ गये उस आदर्श के। एक से एक दागदार अपराधी सदन में पहुँच रहा है। परिणाम वही। देश सेवा के नाम पर स्वपोषण, अपनी सात–सात पीढ़ियों का पोषण और जनता जनार्दन? करती रहे त्राहि माम् त्राहि माम्।

खेद! आज सदन में फूल नहीं बिखेरे जाते बल्कि जूते चप्पलें चलती हैं। अपशब्दों का प्रयोग होता है। माइक उखाड़ कर विरोधी दल पर फेंके जाते हैं। सदन की मर्यादा मानो काफूर बनकर उड़ गई। शेष रह गया स्वच्छन्द आचरण। अर्थ दोहन और लोक कल्याण के स्थान पर स्वकल्याणकारी योजनाओं का क्रियान्वयन। धर्म निरपेक्षता का नारा एक फैशन बन गया है। धर्म की सनातन आस्थाओं पर सुनियोजित कुठाराघात हो रहा है। भारत की धर्म प्रवण आस्थाओं पर बाम पन्थ का मंडराता हुआ साया स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहा है जिससे बेखबर होकर भारत की भोली–भाली आस्थावान जनता खर्राटे भरकर सो रही है।

गणतंत्र दिवस की पावन बेला पर हमारी कामना है। इन राजनीतिक षड्यन्त्रों का अन्त हो, हमारे निर्वाचित नेता निहित स्वार्थों को त्यागकर, दलगत भावना से ऊपर उठकर राष्ट्र की सेवा करें और जन–जन की समस्याएँ सुनकर उनका यथा सम्भव समाधान करें। डॉक्टर, इंजीनियर, अधिवक्ता तथा शिक्षक वृन्द, धन–लोलुपता त्यागकर निःस्पृह भाव से कर्त्तव्य पालन करें, बालकों में राष्ट्रभक्ति के भाव अंकुरित करें, उन्हें पश्चिमी संस्कारों में न रंग कर छत्रपति शिवा और राणा प्रताप जैसा वीर और समर्पित सेनानी बनावें। भारत भौगोलिक एवं आर्थिक संसाधनों से समृद्ध राष्ट्र है। जब दो अरब हाथ भारत की पुष्कल समृद्धि के लिए एक साथ व्योम में उठेंगे तो असम्भव भी सम्भव हो जायेगा। हमें चाहिए हम एक दूसरे की उंगली थामकर आगे बढ़ें किसी को पीछे न धकेलें। प्रत्येक धर्म का आदर करें तथा एक–दूसरे की भावनाओं को जानकर उसका मार्ग प्रशस्त करें। श्रुति कहती है –

''संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।''

कोई धर्म घृणा या द्वेष की शिक्षा नहीं देता। हमारा सनातन उद्घोष है –

''श्रूयतां धर्म सर्वस्वं श्रृत्वा चाप्यवधार्यताम्।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।।''

सर अल्लामा इकबाल का कथन है – **''मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना हिन्दी हैं हम वतन हैं, हिन्दोस्तां हमारा।''** हमारा प्रयास होना चाहिए। इस गुलशन का हर फूल महके, चमन के प्रत्येक फूल पर शबाब निखरे। इसके लिए परम आवश्यक है घृणा, द्वेष और वैमनस्य का पथ त्याग कर हम मानव मात्र से प्रेम करें। जीवन ताप त्रय से पीड़ित है। दया, ममता और करुणा की त्रिवेणी प्रवाहित होने पर ही मानव के मन की प्यास बुझेगी और जन–जन के हृदय में अमृत स्पन्दिनी मन्दाकिनी प्रवाहित होगी। हम पवित्र मन से संकल्प लें।

देश की समृद्धि का रथ तीव्र गति से अग्रसर है। हम व्यक्तिगत अथवा दलगत मतभेदों को भुलाकर, द्वेष भाव त्यागकर इस पवित्र यज्ञ में भाग लें। जिन शहीदों ने स्वाधीनता के प्रहरी बनकर अपना सर्वस्व होम किया है उन हुतात्माओं को हम प्रणाम करें तथा उनकी शहादत का मूल्य चुकाने के लिए उनके पवित्र पथ का अनुगमन करें। भारत के भव्य गणतंत्र का रूप सजाने और संवारने हेतु हम त्याग, तपस्या और सहिष्णुता का पथ अपनायें। यदि हमने लाखों–करोड़ों की सम्पत्ति अर्जित कर ली है तो यह सम्पत्ति यहीं छूट जायेगी। स्वर्गारोहण के समय केवल धर्म हमारे साथ होगा। त्याग, बलिदान और समर्पण करने वाले कर्मवीर मृत्यु के बाद भी याद किये जाते हैं। आईये! हम भी कुछ ऐसा कर दिखाएं कि आने वाली पीढ़ियाँ हमें आदर और श्रद्धा के साथ स्मरण करें। बलिदानों की परिपाटी अमर रहें। भारत माता के हाथ में सुशोभित तिरंगा ध्वज युगों–युगों तक व्योम में फहराता रहे। भारत महान की कीर्ति विश्व में अमर रहे चिरस्थाई हो यही हमारी मंगल कामना है।

''माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः नमो मात्रे पृथिव्यै।''

– विजय वाटिका, कोठी नं.–3, सिविल लाइन्स, बदायूँ (उ. प्र.)

नशाखोरी एवं धार्मिक पाखण्ड समाज के लिए सबसे बड़ी चुनौती – स्वामी आर्यवेश

महर्षि दयानन्द योग धाम, बहरोड़, जिला–अलवर के द्वितीय वार्षिकोत्सव पर विश्व शांति एवं पर्यावरण रक्षा यज्ञ का महत्त्वपूर्ण आयोजन

महर्षि दयानन्द योगधाम, बहरोड़, जिला–अलवर के द्वितीय वार्षिकोत्सव के अवसर पर योग धाम में विश्वशांति एवं पर्यावरण यज्ञ का महत्त्वपूर्ण आयोजन किया गया। यज्ञ में याज्ञिक परिवारों ने सम्मिलित होकर अपनी आहुतियाँ प्रदान की।

इस अवसर पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए मुख्य वक्ता के रूप में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि बढ़ती हुई नशाखोरी तथा धार्मिक अन्धविश्वास एवं पाखण्ड वर्तमान समय में सबसे बड़ी चुनौती है। धर्म का विकृत रूप समाज को पतन की ओर ले जा रहा है। इसी प्रकार नशाखोरी के कारण देश की युवा पीढ़ी एवं गरीब लोग बर्बाद होते जा रहे हैं। स्वामी आर्यवेश जी ने लोगों का आह्वान किया कि वे स्वयं नशा छोड़ने तथा धर्म के नाम पर चल रहे पाखण्ड से मुक्ति पाने के लिए आर्य समाज के साथ जुड़ें। आर्य समाज प्रारम्भ से ही नशाबन्दी एवं पाखण्ड खण्डन का अभियान चलाता आ रहा है। आज फिर यह आवश्यकता है कि समाज के प्रत्येक जागरूक व्यक्ति को इन सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करना चाहिए। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि सिरसा डेरे के मालिक गुरमीत उर्फ राम रहीम को छत्रपति रामचन्द्र की हत्या करने का दोषी पाये जाने पर आजीवन कारावास देकर सी.बी.आई. कोर्ट ने ऐतिहासिक निर्णय दिया है। डेरा प्रमुख की सज़ा सत्य की विजय है। धर्म के नाम पर चल रहे अन्धविश्वास एवं पाखण्ड को कथित बाबा और अधिक बढ़ाने का प्रयास करते हैं तथा अकूत धन एकत्रित करके ऐय्याशी का जीवन जीते हैं। गत दिनों इस प्रकार के अनेक ढोंगी बाबाओं के ढोल की पोल जनता के सामने खुल गई है। अतः अब समय आ गया है कि जनता इन ढोंगियों के विरुद्ध आवाज उठाना शुरू करे और धर्म की रक्षा के लिए आगे आयें। स्वामी आर्यवेश जी ने राजस्थान की सरकार से शराबबन्दी की माँग की। यज्ञ के उपरान्त योगधाम के सभागार में राष्ट्ररक्षा सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिल आर्य, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री धर्मपाल आर्य, श्री धर्मवीर आर्य पत्रकार, श्री बिरजानन्द एडवोकेट महामंत्री सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, श्री जगमाल सिंह डी.पी.ई., श्री धर्मवीर आर्य योगाचार्य, युवा आर्य भजनोपदेशक श्री मोहित आर्य, वैद्य नन्दराम आर्य, एवं बहन अंजलि आर्या आदि ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये। स्थल भोर, रोहतक के मंहत बालकनाथ जी महाराज भी यज्ञ में आशीर्वाद देने के लिए पधारे। इस कार्यक्रम के आयोजक एवं संयोजक श्री राम कृष्ण शास्त्री ने यजमानों एवं विद्वानों को शॉल एवं स्मृति चिन्ह देकर स्वागत किया। उनके साथ आर्य समाज बहरोड़ के प्रधान श्री रामानन्द प्रधान, मंत्री श्री विनोद आर्य, श्री विद्यारतन योगाचार्य, श्री वेद प्रिय आर्य एवं मा. विनोद यादव आदि ने भी सहयोग किया। कार्यक्रम दिनभर चलता रहा और रात्रि में भजनों का विशेष कार्यक्रम रखा गया था जिसे लोगों ने श्रद्धाभाव से सुना। यज्ञ में स्वामी सेवानन्द, ब्र. रामदेव वैदिक आश्रम जोणायचा, ब्र. ध्रुव गुरुकुल झज्जर आदि ने भी वेद पाठ में सहयोग दिया। कार्यक्रम अत्यन्त आकर्षक रहा।

पृष्ठ 1 का शेष

सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग की बैठक

प्रत्याशी को चुनाव मैदान में उतारा था जो कि धन–बल एवं जातीय समीकरण से भी काफी मजबूत था, किन्तु अपने व्यवहार, मिलनसारिता एवं अनथक परिश्रम से मनीषा ने सारे समीकरण बदल डाले और जीत हासिल करके भाजपा के सारे मनसूबे फेल कर दिये।

बैठक में एक शोक प्रस्ताव के द्वारा महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के निधन पर शोक संतप्त परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त की गई तथा दिवंगत आत्माओं की सद्गति की कामना की गई। दिवंगत महानुभावों में सर्वश्री वैदिक विद्वान् डॉ. भवानी लाल भारतीय (श्री गंगानगर, राज.), श्री चक्रकीर्ति सामवेदी (सार्वदेशिक सभा के कार्यकारी प्रधान श्री सत्यव्रत सामवेदी जी के सुपुत्र, जयपुर, राज.), डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया (दिल्ली), प्रो. श्योताज सिंह जी (महामंत्री, बंधुआ मुक्ति मोर्चा एवं अन्तरंग सदस्य सार्वदेशिक सभा), श्री अटल बिहारी वाजपेयी (पूर्व प्रधानमंत्री, भारत सरकार), डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, पूर्व प्रधान उत्तराखण्ड आर्य प्रतिनिधि सभा, (देहरादून), प्रो. रामविलास शर्मा जी शिक्षामंत्री हरियाणा की पूज्य माता जी (चण्डीगढ़), रघुवीर सिंह जी (श्री बाबूलाल आर्य, जूई, भिवानी के बड़े भाई), माता सुरजीत कौर (करनाल, हरि.), अतर सिंह आर्य क्रांतिकारी (नलवां,हिसार, हरि.), पं. तुलसीराम आर्य (भजनोपदेशक पलवल, हरि.), स्वामी धर्मानन्द जी (आर्य समाज कौंकेरा, मथुरा, उ. प्र.), श्री शमशेर सिंह विष्ट (अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड), श्री संजीव मंगला एडवोकेट (पलवल, हरि.), श्री रामचन्द्र वेंदा (पूर्व सांसद फरीदबाद), श्री श्यामवीर राघव (आर्य भजनोपदेशक, दिल्ली), श्री रामसेवक दुबे (सभा कार्यालयाध्यक्ष श्री रविन्द्र कुमार के पिता जी, कन्नौज, उ. प्र.) श्रीमती सरोज अग्निहोत्री (धर्मपत्नी श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री, दिल्ली), श्री मोतीलाल आर्य (धर्माचार्य, आर्य समाज बुलानाला, वाराणसी), आचार्य वेदव्रत शास्त्री (आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक, हरि.), श्री बाबू लक्ष्मीचन्द आर्य (फरीदाबाद, हरि.), श्री दीपचन्द आर्य (कीरतपुर, बिजनौर, उ. प्र.), श्रीमती बिमला मेहता (फरीदाबाद), श्रीमती प्रेमकुंवर जी (श्री रामसिंह आर्य सार्वदेशिक सभा के उपमंत्री की माता जी, जोधपुर), पं. ईश्वरचन्द्र शास्त्री धर्माचार्य (आर्य समाज जीन्द), डॉ. जुगलाल आर्य (स्वतंत्रता सेनानी, ग्राम धारवानवास, भिवानी, हरि.), स्वामी यज्ञमुनि जी (लोहरदगा), श्री सूरजभान आर्य (भिवानी, हरि.), श्री सुखदेव जी की माता जी (कैथल, हरि.), केरल में भयंकर बाढ़ एवं जल प्रलय में मारे गये नर–नारी एवं बच्चों के निधन पर गहरा दुःख प्रकट किया गया। प्रस्ताव में सभा की ओर से भावना व्यक्त करते हुए कहा गया कि इन सब महानुभावों एवं देवियों का निधन आर्यसमाज एवं राष्ट्र की अपूर्णीय क्षति है। दुःख की इस घड़ी में सभा सभी शोक संतप्त परिवारों के प्रति अपनी सांत्वना व्यक्त करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्माओं को शांति एवं सद्गति प्रदान करें।

मादक पदार्थों के सेवन की बढ़ती हुई प्रवृत्ति : कारण एवं परिणाम

– डॉ. अखिलेश निगम 'अखिल'

आज सम्पूर्ण विश्व के प्रत्येक राष्ट्र के युवाओं में नशाखोरी की बढ़ती हुई प्रवृत्ति ने एक विकराल स्वरूप धारण कर लिया है। हमारे देश में नशाखोरी का प्रचलन इतना बढ़ गया है कि लोग इसे फैशन समझ बैठे हैं। नशाखोरी से हमारे समाज का प्रत्येक वर्ग विशेष रूप से युवावर्ग अत्यधिक दिग्भ्रमित हो रहा है, इससे उसका शारीरक एवं मानसिक पतन हो रहा है तथा वह आर्थिक, चारित्रिक एवं बौद्धिक रूप से भी अन्धकार के दलदल में निरन्तर फंसता चला जा रहा है। पाश्चात्य संस्कृति का अन्धानुकरण भी भारतीय संस्कृति को उपेक्षित कर रहा है, नवयवुक मादक पदार्थों का सेवन कर अपने आपको अत्याधुनिक सिद्ध करने का प्रयास करते हैं; किन्तु इस कड़ी में वह यह भूल जाते हें कि उनका जीवन अशांति, अन्धकार, निराशा, अपराध एवं असामाजिकता की ओर उन्मुख हो रहा है।

आज का युवावर्ग अपनी कुण्ठा, हताशा एवं शिक्षा में असफलता या एकाकीपन दूर करने के लिए भी मादक पदार्थों का धड़ल्ले से सेवन कर रहा है इसमें उनकी गलत संगति का भी बहुत बड़ा प्रभाव है। वास्तव में यह बहुत बड़ी विडम्बना है कि एक मित्र अपने मित्र को नशीले पदार्थों का सेवन करने की आदत डालकर सच्ची मित्रता का अहसास दिलाना चाहता है। प्रारम्भ में वह उत्सुकतावश या मित्रता के दबाव में किसी भी नशीले पदार्थ का सेवन करता है। धीरे–धीरे वह इसे मनोरंजन का साधन मानने की भूल कर बैठता है। जब नशीले पदार्थ का सेवन उसकी आदत में शुमार हो जाता है तो ऐसी स्थिति में यदि कोई सच्चा मित्र या उसका कोई शुभचिन्तक उसे सही मार्ग दिखाने का प्रयास करता है, तो वह नशे की आदत को सही सिद्ध करने के लिए झूठे तर्क बना लेता है।

नशीली वस्तुओं के सेवन में सर्वाधिक प्रभावित 14 से 35 वर्ष के लोग हैं। समाज का किशोर वर्ग भी इसकी चपेट में है। हमारे जीवन की 12–18 वर्ष की अवस्था जिसे हम किशोरावस्था कहते हैं, जीवन की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण, संवेदनशील एवं भावी जीवन की आधारशिला निर्मित करने की अवस्था होती है। ढेर सारे दिवास्वप्नों के साथ विभिन्न प्रकार की शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, भावनात्मक परिवर्तनों का सामना करते हुए एक किशोर अनेकानेक समस्याओं एवं जिम्मेदारियों के साथ साक्षात्कार करता है। स्वभाव से जिज्ञासु प्रवृत्ति का होने के कारण वह समाज में व्याप्त अच्छाइयों एवं बुराइयों दोनों के प्रति स्वाभाविक रूप से आकर्षित होता है। विभिन्न प्रकार के माध्यमों तथा टी.वी., पोस्टर एवं विभिन्न प्रकार के आकर्षक विज्ञापन आदि के द्वारा सर्वाधिक आकर्षण मादक पदार्थों के प्रति होता है, जिसे शौकिया तौर पर प्रारम्भ करके किशोर उसके आदी होते चले जाते हैं। भारत में शराब का सेवन करने वाले किशोरों की संख्या लगभग 10 प्रतिशत और शैकिया तौर पर लुक–छिप कर शराब पीने वालों की संख्या 25–27 प्रतिशत तक है।

भारत के विभिन्न शहरों के विश्वविद्यालयों, डिग्री एवं माध्यमिक कॉलेजों के छात्र–छात्राओं में नशे की प्रवृत्ति बड़ी तेजी से बढ़ती जा रही है। एक नवीनतम सर्वेक्षण में यह बात भी उभर कर सामने आई है कि सह शिक्षा वाले कॉलेजों में लड़कियों द्वारा भी मादक पदार्थों का सेवन करना प्रारम्भ कर दिया गया है। इसमें सम्पन्न घरानों के लड़कों एवं लड़कियों द्वारा एल्कोहल पेय का धड़ल्ले से सेवन किया जा रहा है। इसका मुख्य कारण पाश्चात्य संस्कृति का अन्धानुकरण एवं अपने आप को आधुनिक सिद्ध करने की होड़ की प्रवृत्ति मुख्य रूप से उभर कर सामने आई है।

युवा वर्ग में मादक पदार्थों के सेवन के प्रमुख कारण

युवा वर्ग में नशीले पदार्थों के सेवन के पीछे विभिन्न प्रकार के पारिवारिक, मानसिक, सामाजिक व अन्य कारण होते हैं, जो निम्नलिखित है।

- परिवार में किसी बड़े सदस्य द्वारा खुलेआम नशीले पदार्थों का सेवन करना।
- साथियों और मित्रों के दुष्प्रभाव व कुसंगति के कारण।
- संरक्षकों और माता–पिता के द्वारा अपने बच्चों को कम स्नेह और सुरक्षा देना अथवा उपेक्षित व्यवहार मिलना।
- परिवार में सदस्यों के बीच प्रेम की भावना का अभाव होना।
- माता–पिता की अतिव्यस्तता और बच्चों की समस्याओं से अनभिज्ञ होने के कारण।
- कुण्ठा, निराशा और थकान दूर करने के लिए।
- पढ़ाई में मन न लगना, बेरोजगारी तथा भविष्य व कैरियर के प्रति निराशावादी दृष्टिकोण होना।
- घर से या सामाजिक मान्यताओं के विरुद्ध विद्रोह की भावना पनपना।
- आसपास के वातावरण में नशीली वस्तुओं की सहज उपलब्धि के कारण।
- जीवन में किसी भी प्रकार का खतरा व आनन्द लेने की इच्छा होना।

मादक पदार्थों का सेवन करने वालों के लक्षण व पहचान

- आँखों में लाली रहना, सूजन, सुस्ती और नींद की अधिकता।
- अकारण क्रोध, चिड़चिड़ापन व अत्यधिक तर्क–वितर्क करना।
- भूख कम लगना।
- उल्टियाँ होना, खांसी का दौरा पड़ना व शरीर में दर्द तथा हाथों में कंपन होना।
- पढ़ाई, खेलकूद या अन्य कार्यों में मन न लगना।
- जबान लड़खड़ाना और अस्पष्ट उच्चारण।
- मुँह से शराब व अन्य पदार्थों की महक आना तथा शरीर से विशेष प्रकार की दुर्गन्ध आना।
- बात कहकर भूल जाना, गुमराह करना और झूठ बोलना।
- पारिवारिक सदस्यों व पारिवारिक कार्यक्रमों में अरुचि पैदा होना।
- स्कूल व कक्षा से प्रायः अनुपस्थित रहना व शिक्षकों की इज्जत न करना।
- बाहों, कपड़ों व शरीर में जगह–जगह पर इंजेक्शन के निशान।
- घर से पैसा अथवा सामान का गायब होना।
- घर में एल्यूमीनियम फाइल, मोमबत्ती, माचिस मिलना या नये पैकेट मिलना।
- प्रायः असामाजिक कार्यों में संलिप्त रहना व अधिक खर्च करना।

नशीले पदार्थों के सेवन के दुष्परिणाम

- शराब के अत्यधिक सेवन से लीवर में सूजन, अल्सर, पीलिया, रक्तचाप, हृदय रोग एवं हार्ट अटैक की सम्भावना अत्यधिक बढ़ जाती है। मधुमेह के साथ–साथ पेट एवं आंत सम्बन्धी विभिन्न रोग उत्पन्न हो जाते हैं।
- अत्यधिक धूम्रपान एवं तम्बाकू सेवन से दमा, ब्रोंकाइटिस, मुँह, गले या फेफड़े का कैंसर, हाई ब्लड प्रेशर, दिल का दौरा पड़ना, अल्सर, भूख न लगना, गुर्दा रोग, मधुमेह एवं दांतों तथा मसूढ़ों की विभिन्न प्रकार की बीमारियाँ उत्पन्न हो जाती हैं।
- यौन सम्बन्धी विकार नपुंसकता एवं किशोर बालिकाओं में भविष्य में बांझपन की सम्भावना बढ़ जाती है।
- मानसिक दुर्बलता, याददाश्त में कमी, अनावश्यक उत्तेजना एवं स्वभाव में चिड़चिड़ापन जैसे विकार उत्पन्न हो जाते हैं।
- पारिवारिक कलह एवं अशांति का वातावरण उत्पन्न होना।
- नवयुवकों में नशे की लत के कारण चोरी एवं अपराध की दुष्प्रवृत्ति का विकास होना।
- नशे के कारण व्यक्ति में आत्महत्या की प्रवृत्ति भी बढ़ जाती है। वाहन दुर्घटनाओं का प्रमुख कारण नशा ही है।

अतः उक्त विवेचना से स्पष्ट है कि हमें सुदृढ़ एवं उन्नत राष्ट्र के निर्माण हेतु देश के युवावर्ग को नशारूपी दानव से मुक्त रखना पड़ेगा, जिसमें राजनेता, अधिकारी, समाजसेवी, बुद्धिजीवी पत्रकार एवं साहित्यकारों का भी यह परम दायित्व है कि हम सभी मिलकर समवेत रूप से नशाखोरी के विरुद्ध शंखनाद करें तथा नशीली वस्तुओं के विरुद्ध सामूहिक जनजागरण अभियान चलायें ताकि हमारा समाज नशीली वस्तुओं के चंगुल से पूर्णतया मुक्त हो सके।

– ओम निवास, 51 क्ले स्क्वायर, कबीर मार्ग, लखनऊ–226001 (उ. प्र.)

वैदिक नित्य कर्म विधि

– लेखक आचार्य श्री पं. हरिदेव आर्य एम.ए.

इस पुस्तक में प्रातःकाल के मन्त्र, संन्ध्या, ईश्वर स्तुति, प्रार्थना मंत्र, दैनिक यज्ञ, स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण, विशेष यज्ञ और विशेष आहुतियाँ, अमावस्या, पूर्णिमा आदि के विशेष मन्त्र, ईश्वर प्रार्थना, पचास भजन संग्रह आदि के अतिरिक्त जन्मदिन, वर्षगांठ, सगाई, गोद भरना, वर तथा बारात का स्वागत, व्यापार का शुभारम्भ, भवन शिलान्यास, क्रिया सम्बन्धी (उठाला), यात्रा–गमन, शुद्धि संस्कार पद्धति, यजुर्वेद के 40वें अध्याय से युक्त सभी आर्यों के पर्वों के मन्त्र आर्य पर्व पद्धति भी सम्मिलित है। **विशेष बात यह है कि सब मन्त्र मोटे और लाल, सभी मन्त्र अर्थ सहित और कविता पाठ में भी और प्रत्येक मंत्र के आरम्भ में ओ३म् भी मुद्रित है।** 23x36 का बड़ा साईज, आकर्षक टाईटिल तथा पृष्ठ संख्या 176, संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण मूल्य एक प्रति 175 रुपये डाक व्यय अलग होगा।

बुक मंगाते समय यदि आप सीधे राशि भेजना चाहते हैं तो निम्न खाते में राशि भेजकर दूरभाष पर सूचित करें :–

मधुर प्रकाशन
खाता संख्या–0127002100058167
IFSC Code No.- PUNB0012700
पंजाब नेशनल बैंक, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

मधुर प्रकाशन
2804, गली आर्य समाज,
बाजार सीताराम, दिल्ली–110006
मो.:–9810431857

स्वास्थ्य चर्चा

अलसी के छोटे–छोटे दानों में छिपे हैं – बड़े–बड़े गुण

– वैद्य हरिकृष्ण पांडेय 'हरीश'

कुछ लोगों के लिए अलसी का नाम नया हो सकता है लेकिन कई क्षेत्रों में इसका प्रयोग भरपूर होता है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी ने कहा था कि जिस समाज में अलसी का सेवन किया जाता है वह समाज सदा स्वस्थ रहता है। अलसी को फ्लेक्सी सीड भी कहा जाता है। आयुर्वेद में अलसी के सेवन के भी नियम हैं। जैसे अलसी के दाने को चुनकर सबसे पहले इसको साफ कर ज्यादा से ज्यादा सौ ग्राम कड़ाही में डाल कर जरा सा घी का छींटा लगाकर भूनें। भूनते समय ढक कर भूनें। चटक कर उछलती है, इसलिए सावधानी बरतें। चट–चट करने लगे तब गैस बंद कर ठंडा होने दें। ठंडा होने पर अलसी के दाने को मिक्सी में डालकर दरदरा पीसें। ढक्कन बंद डिब्बे में सुरक्षित रखें। एक–एक चम्मच पानी या दूध के साथ लें। ध्यान रखें इसे सिर्फ एक हफ्ते के अन्दर ही प्रयोग करें, बाद में खराब हो जाता है। ऐसे में अगर हम अलसी का सेवन करें तो निश्चित रूप से कई बीमारियों से छुटकारा पाया जा सकता है तथा शरीर को चुस्त एवं फिट रखा जा सकता है। किस बीमारी में अलसी का प्रयोग करें वो इस प्रकार है :–

खांसी–जुकाम – अलसी की चाय पियें, बनाने का तरीका जरा अलग है। दो कप पानी उबालें, एक चम्मच अलसी पाउडर डालें, धीमी आंच पर पकायें। आधा यानी एक कप पानी बच जाये तो छान लें, गुड़ या शहद मिलाकर दिन में दो से तीन बार पियें।

दमा – एक चम्मच अलसी के चूर्ण को आधे गिलास पानी में बारह घंटे तक भिगोकर रखें। सवेरे का भीगा शाम को और शाम का भीगा सवेरे छान कर पिलायें। ध्यान रहे

गिलास या तो चांदी की या शीशे की हो।

डायबिटीज – ताजा पिसी अलसी, आंटा गूंथते समय 25 ग्राम मिलाकर रोटी खायें।

हृदय के लिए उपयोगी – खराब कोलस्ट्रोल की मात्रा कम करती है। दिल की धमनियों में खून के थक्के नहीं जमने देती। एक–एक चम्मच सुबह–शाम पानी या दूध के साथ लें।

पाचनतंत्र को सहायता – अलसी में ऐसे फाईबर होते हैं जो कब्ज, बवासीर, भगंदर, प्रवाहिका आदि में बहुत लाभकारी है। कब्ज के लिए तो अलसी अति उत्तम है। पित्त की थैली में पथरी हो तो अलसी का सेवन चमत्कारिक लाभ देता है।

हैजा – हैजा में इसका चूर्ण 5 ग्राम, 50 ग्राम पानी में डालकर ठंडा कर दिन में तीन बार पिलाना हितकारी है।

अनिद्रा – नींद न आना, कम आना, मानसिक तनाव आदि के लिए अलसी तथा एरंडी का तेल मिलाकर सिर पर मालिस करने, पांव के तलवे पर मलने से आराम मिलता है।

वीर्य विकार – इसका चूर्ण, समान भागखंड, आधी मात्रा देशी घी मिलाकर सुबह–शाम एक चम्मच लेना चाहिए।

पेट की गर्मी – अलसी का सेवन पेट की गर्मी दूर करने तथा दस्त साफ कर वीर्य को गाढ़ा बना संतानोपत्ति योग्य बनाती है।

कम्पवात (पारकिंसन) – इस बीमारी में हाथ–पैर पर सिर का नियंत्रण नहीं होता। हमेशा हिलते रहते हैं, चलने में परेशानी होती है। एक चम्मच अलसी चूर्ण शहद के साथ दिन में दो बार देना हितकर है।

कमर तथा जोड़ों का दर्द – अलसी में सोंठ का चूर्ण और नमक मिलाकर लगाने से लाभ होता है। बनाने की विधि अलसी तेल 250 ग्राम, 15 ग्राम सोंठ चूर्ण, 15 ग्राम नमक डालकर धीमी आग पर पकाएं, जब तेल में धुआं उठने लगे तब उतार कर छान कर ठंडा कर दर्द वाले स्थान पर लगायें।

जलने पर – अलसी तेल, चूने का पानी मिलाकर खूब घोंटें। यह सफेद मलहम बन जायेगा, जले स्थान पर दिन में दो बार लगायें। इसके अलावा अलसी के सेवन से यौवन समस्या, शारीरिक दुर्बलता, गर्भपात, स्तनपान के दौरान दूध न आना, कम आने में एक–एक चम्मच सुबह–शाम पानी या दूध से लेना हितकर है। साथ ही रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने तथा थायरॉयड की कार्यकुशलता नियंत्रित करने एवं नियमित करने में सहायक है।

जहां नहीं होता कभी विश्राम ॥ओ३म्॥ आर्य युवक परिषद् है उसका नाम

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 40 वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में

वायु प्रदुषण, पर्यावरण शुद्धि व राष्ट्र की सुख समृद्धि हेतु

डॉ. अशोक कुमार चौहान की अध्यक्षता व आचार्य अखिलेश्वर जी के ब्रह्मत्व में

स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी के सान्निध्य में

251 कुण्डीय विराट् यज्ञ

एवम्

अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन

दिनांक : 1, 2, 3 फरवरी 2019 (शुक्रवार, शनिवार, रविवार)

स्थान : पंजाबी बाग स्टेडियम, रिंग रोड, नई दिल्ली–110026 (मेट्रो स्टेशन, पंजाबी बाग)

राष्ट्रीय एकता शोभा यात्रा : शनिवार, 2 फरवरी 2019, प्रातः 10.30 बजे से

रूट: पंजाबी बाग स्टेडियम से शुभारम्भ वाया वेस्ट एवेन्यू, सेन्ट्रल मार्किट, आर्य समाज, गुरु नानक स्कूल, लाल बत्ती से बाएं, नॉर्थ एवेन्यू, क्लब रोड, मादीपुर चौक से दाएं, मादीपुर गांव, अरिहन्त नगर, वेस्ट एवेन्यू होकर वापिस स्टेडियम पर समापन।

संयोजक–लॉयन प्रमोद सपरा, वीरेश बुग्गा, डॉ. दीपक सचदेवा, डॉ. विपिन खेड़ा, विश्वनाथ आर्य, सन्तोष शास्त्री, वीरेश आर्य, राकेश भटनागर, योगेन्द्र शास्त्री, प्रवीण आर्य, वीरेन्द्र योगाचार्य, डॉ. विशाल आर्य, ब्र. दीक्षेन्द्र, के.एल. राणा, ओमवीर सिंह, दिनेश आर्य, के.के. यादव, ईश आर्य, देवदत्त आर्य, विक्रांत चौधरी, विपिन मित्तल, जीवनलाल आर्य, सीमा–रोहित धींगड़ा, के.के सेठी, माधव सिंह, अशोक सरदाना, डिम्पल–नीरज भंडारी, नरेश विग, सुनील अग्निहोत्री, कस्तूरीलाल मक्कड़, सुरेन्द्र कोछड़, वेदप्रकाश आर्य, डॉ. मुकेश सुधीर

मुख्य यजमान : सर्वश्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री, राजीव कुमार परम, अरुण बंसल, सुरेन्द्र मानकटाला, महेन्द्र मनचन्दा

शुक्रवार 1 फरवरी, 2019		शनिवार 2 फरवरी, 2019		रविवार 3 फरवरी, 2019	
101 कुण्डीय विराट यज्ञ	प्रातः 8.30 से 10.30	यज्ञ	प्रातः 8.30 से 9.30	151 कुण्डीय विराट् यज्ञ	प्रातः 8.30 से 10.30
ध्वजारोहण	प्रातः 10.45 बजे	ध्वजारोहण	प्रातः 10.00 बजे	ध्वजारोहण	प्रातः 11.00 बजे
आर्य महिला सम्मेलन	11.00 से 2.00 बजे	राष्ट्रीय एकता शोभा यात्रा	प्रातः 10.30 से 1.30	राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन	11.30 से 2.30
आर्य युवा सम्मेलन	2.15 से 5.00 बजे	राष्ट्र रक्षा सम्मेलन	दोपहर 2.30 से 5.30	शिक्षा संस्कृति बचाओ सम्मेलन	2.30 से 4.30
व्यायाम शक्ति प्रदर्शन	5.00 से 6.00 बजे	सामुहिक सन्ध्या	सायं 5.30 से 6.00	कार्यकर्ता सम्मान समारोह	सायं 4.30 से 5.00 बजे
भव्य संगीत संध्या	रात्रि 7.00 से 9.00 बजे	वेद संस्कृत रक्षा सम्मेलन	रात्रि 7.00 से 9.00	धन्यवाद एवम् शांतिपाठ समापन	सायं 5.30 बजे

दिल्ली के बाहर से आने वाले आर्य बन्धु अपने पधारने की संख्या व समय के बारे में व यज्ञमान बनने के इच्छुक 15 जनवरी 2019 तक सूचित करने की कृपा करें जिससे भोजन व आवास का उचित प्रबंध किया जा सके। सम्पर्क : देवेन्द्र भगत–9958889970, दुर्गेश आर्य–9868664800, राजीव आर्य–9968079062 सुनील सहगल–9968074213, सौरभ गुप्ता–9971467978, अरुण आर्य–9818530543, वरुण आर्य–8586801154, विनोद कालरा–9899444347

हज़ारों की संख्या में पहुँचकर आर्य समाज की विराट् संगठन शक्ति का परिचय दें

अपील

इस रचनात्मक विशाल कार्यक्रम में आपका तन, मन, धन से सहयोग अपेक्षित है कृपया दानराशी क्रास चैक/ड्राफ्ट द्वारा ''केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली'' के नाम से कार्यालय के पते पर भिजवायें। ऋषि–लंगर के लिए आटा, दाल, चावल, चीनी, शुद्ध घी, रिफाईन्ड, सब्जी, मसाले आदि खाद्य सामग्री देकर पुण्य के भागी बनें

निवेदक

अनिल आर्य	यशोवीर आर्य	आनन्द चौहान	डॉ. रिखबचन्द जैन	सुभाष आर्य	सुरेन्द्र कोहली
राष्ट्रीय अध्यक्ष	रामकुमार सिंह	ठाकुर विक्रम सिंह	डॉ. लाजपत राय आर्य	कैलाश सांकला	नरेन्द्र आर्य सुमन
महेन्द्र भाई	सुभाष बब्बर	मायाप्रकाश त्यागी	योगराज अरोड़ा	रवि चड्डा	गायत्री मीना
राष्ट्रीय महामंत्री	स्वतन्त्र कुकरेजा	चन्द्रमोहन खन्ना	रमेश कुमारी भारद्वाज	राजेन्द्र लाम्बा	बलदेव जिन्दल
सुरेश आर्य	आनन्द प्रकाश आर्य	प्रदीप तायल	धर्मपाल कुकरेजा	बलदेव सचदेवा	डॉ. गजराज सिंह आर्य
सुशील आर्य	राम कृष्ण शास्त्री	प्रवीन तायल	प्रेम कुमार सचदेवा	सत्यानन्द आर्य	ब्रह्मप्रकाश मान
राष्ट्रीय मंत्री	कृष्ण प्रसाद कौटिल्य	अमित मान	प्रिं. अंजु महरोत्रा	आर.पी. सूरी	रविदेव गुप्ता
धर्मपाल आर्य	भानुप्रताप वेदालंकार	विकास गोगिया	सत्यवीर चौधरी	सुभाष मित्तल	ए.के. धवन
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	स्वागताध्यक्ष	स्वागतमंत्री		

स्वागत समिति: आ. प्रेमपाल शास्त्री, ओम सपरा, धर्मपाल परमार, अंजु जावा, नरेन्द्र कस्तूरिया, देवमित्र आर्य, उर्मिला आर्या, अर्चना पुष्पकरणा, जितेन्द्र डावर, गवेन्द्र शास्त्री, प्रवीण भाटिया, राजरानी अग्रवाल, विवेक–हीरालाल चावला, डॉ. विनोद क्षेत्रपाल, अमरनाथ बत्रा, भोपाल सिंह आर्य, अरविन्द आर्य, विजय भास्कर, विजयारानी शर्मा, अमीरचन्द रखेजा, चन्द्रप्रभा अरोड़ा, राजेन्द्र दुर्गा, राजेन्द्र निझावन, ओमप्रकाश यजुर्वेदी, चतरसिंह नागर, सुरेन्द्र शास्त्री, रामलुभाया महाजन, आदर्श आहूजा, प्रदीप गोगिया, सुशील बाली, डॉ. धर्मवीर आर्य, ओमप्रकाश गुप्ता, रणसिंह राणा, अशोक आर्य, बृजेश–पीतम गुप्ता, रमेश गाडी, सरोज–जवाहर भाटिया, मनोहरलाल चावला, हरिचन्द स्नेही

कार्यालय : आर्य समाज, कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली–110007, मो. 9810117464, 9213402628, 9871581398, 9013137070

E-mail: aryayouth@gmail.com Website: www.aryayuvakparishad.com

Group: aryayouthgroup@yahoogroups.com • join-http:// www.facebook.com/group/aryayouth

आर्य समाज सुभाष नगर, नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज, सुभाष नगर का वार्षिकोत्सव दिनांक 12 से 14 जनवरी, 2019 को लोहड़ी और मकर संक्रांति के अवसर पर धूमधाम से मनाया गया। तीनों दिन यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती जी रहे। उन्होंने अपने प्रवचनों में मनुष्य जीवन में आर्य समाज के नियमों की उपयोगिता और वेद आज्ञा का पालन करने के लाभों पर विस्तार से प्रकाश डाला और कहा कि आर्य समाज से जुड़े व्यक्ति का शारीरिक आत्मिक और सामाजिक विकास तीव्रता से होता है। स्वामी [redacted]ईश स्मरण और परिवार में अग्निहोत्र करने पर विशेष बल दिया और कहा कि ऐसा करने से ही मनुष्य शुभ कर्म करता हुआ मोक्ष के मार्ग को प्राप्त कर लेता है।

इस अवसर पर प्रसिद्ध भजनोपदेशिका बहन धर्म रक्षिता शास्त्री के भजन प्रतिदिन होते रहे। इस अवसर पर जादूगरी के क्रिया–कलाप भी दर्शाये गये।

– संजीव आर्य, प्रधान, आर्य समाज सुभाषनगर, नई दिल्ली

शोक समाचार

श्री यज्ञमुनि, निवासी लोहरदगा (झारखण्ड) का देहावसान 25 नवम्बर, 2018 को हो गया था। इसकी सूचना उनके पुत्र जो दिल्ली में सेवारत हैं, गुरुकुल गौतमनगर में मिलने पर दी थी। मुनि जी ने झारखण्ड में वेद प्रचार का कार्य बड़ी कर्मठता से किया, उन्होंने लोहरदगा में गुरुकुल स्थापना हेतु भूमि प्राप्त कर ली थी, परन्तु ईश्वर की व्यवस्थानुसार वह गुरुकुल स्थापित न कर सके। वे प्रत्येक वर्ष आर्योत्सव लोहरदगा में कराते थे। स्थानीय क्षेत्र में उनका काफी सम्मान था।

सार्वदेशिक सभा के समस्त पदाधिकारी और कार्यकर्ता श्री यज्ञमुनि जी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि उनकी आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें।

– स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती

जयपुर : वैदिक संस्कारों से ओत–प्रोत परम ऋषि भक्त श्री वृद्धिचन्द्र विगत 19 नवम्बर को जीवन यात्रा पूरी कर गए। जयपुर आर्य जगत में अग्रणी श्री वृद्धिचन्द्र, आर्य समाज कृष्ण पोल के सदस्य थे। उनका अंतिम संस्कार, संस्कार विधि की व्यवस्थानुसार सम्पन्न हुआ। वैदिक संस्थाओं को आर्थिक योगदान में उनकी सदैव रुचि रही।

पिता श्री की भावनाओं के अनुकूल शांति यज्ञ स्वनिवास स्थान पर पुत्र श्री वेद प्रकाश ने आयोजित किया। यज्ञ के ब्रह्मा सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के प्रदेशाध्यक्ष श्री यशपाल 'यश' ने इस यज्ञ में प्रदूषण निवारण मंत्रों से भी आहुतियां दिलवाई।

– ईश्वर दयाल माथुर

श्री पूर्णानन्द सरस्वती, निवास आर्य समाज, हाथरस का देहावसान 5 जनवरी, 2019 को हृदय गति रूक जाने से हो गया था। श्री पूर्णानन्द जी ने गुरुकुल, साधु आश्रम, अलीगढ़ में अध्यापन कार्य किया था। वे उच्चकोटि के भजनोपदेशक थे। वे परिब्राजक ब्रह्मचारी थे। मृदु स्वभाव और प्रिय वाणी के धनी थे। उनके जाने से आर्य समाज की अपूर्णीय क्षति हुई है। सार्वदेशिक सभा के समस्त पदाधिकारी और कार्यकर्ता ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि श्री पूर्णानन्द जी की आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें।

– स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2018-20]

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् एवं आर्य राष्ट्र के शंखनाद राजधर्म 'मासिक' पत्रिका की स्थापना के 50 वर्ष पूरे होने पर भव्य

स्वर्ण जयन्ती समारोह

दिनांक : 9, 10 मार्च, 2019 (शनिवार, रविवार)
स्थान : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, जिला–रोहतक (हरियाणा)

कार्यक्रम के मुख्य आकर्षण

- चतुर्वेद पारायण महायज्ञ
- स्मारिका का विमोचन
- कर्मठ कार्यकर्ताओं का सम्मान
- आगामी 50 वर्षों के कार्यों की घोषणा।
- 50 वर्ष के इतिहास पर डोक्यूमेंट्री फिल्म।
- व्यायामाचार्यों एवं योग शिक्षकों का सम्मान
- 50 जीवनदानी कार्यकर्ता तैयार करने का लक्ष्य।
- परिषद् के संस्थापकों एवं सहयोगियों का सम्मान
- पिछले 50 वर्षों की ऐतिहासिक गतिविधियों की प्रदर्शनी।
- 'राजधर्म' मासिक पत्रिका के पिछले 50 वर्षों में प्रकाशित महत्वपूर्ण अंकों की प्रदर्शनी।
- स्वामी इन्द्रवेश जयन्ती समारोह एवं चतुर्वेद महायज्ञ पूर्णाहुति कार्यक्रम 9 मार्च, 2019 को।

आयोजक

युवा निर्माण अभियान, स्वामी इन्द्रवेश फाऊण्डेशन, स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ टिटौली, हरियाणा
941663 0916, 93 54840454, 9468165946

आर्य नेता श्री पतराम त्यागी ने अपने निवास पर किया सामवेद पारायण यज्ञ का भव्य आयोजन

आर्य समाज शकरपुर के यशस्वी मंत्री, आर्य नेता श्री पतराम त्यागी ने अपने निवास पर सामवेद पारायण यज्ञ का भव्य आयोजन किया। इस यज्ञ के ब्रह्मा श्री बृजराज शास्त्री रहे। 22 दिसम्बर, 2018 (पूर्णिमा) से प्रारम्भ हुए इस विशेष यज्ञ की पूर्णाहुति 20 जनवरी, 2019 को की गई। पूर्णाहुति के अवसर पर मुख्य यजमान के पद पर त्यागी जी के सुपुत्र श्री विपिन त्यागी सपत्नीक आसीन हुए। इस अवसर पर क्षेत्र के अनेकों गणमान्य महानुभावों ने पधारकर यज्ञ में अपनी आहुति अर्पित की। पूर्णाहुति के अवसर पर श्री त्यागी जी ने सामवेद की महत्ता पर विस्तार से प्रकाश डाला। आहुति अर्पित करने वालों में मुख्य रूप से डॉ. देवेन्द्र शर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक सी.एस.आई.आर., श्री एस.डी. गर्ग डाइरेक्टर सी.एस.

आई.आर., श्री पी. के. इन्द्रायणी विज्ञान लोक, श्री रमेश गोयल दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर, श्री बी.बी. त्यागी स्थायी समिति के पूर्व चेयरमैन, श्री अजय भारद्वाज, डॉ. सुनीता भारद्वाज, श्री आर.के. शर्मा प्रधान आर.डब्ल्यू.ए. ब्लाक, श्री वेद प्रकाश त्यागी, सनातन धर्म सभा के एस.एन. पाण्डेय, श्री बृजभान त्यागी, श्री सत्यवीर त्यागी, श्री लखमी त्यागी, आई.टी. सेल के श्री अशोक शर्मा, श्री वेद प्रकाश वानप्रस्थी, श्री राकेश शर्मा, श्री नन्द कुमार वर्मा, श्री प्रभु दयाल सचदेवा, श्री महेन्द्र सचदेवा, श्री ईश्वरचन्द्र त्यागी तथा श्री पतराम त्यागी जी के पारिवारिक सदस्यों ने अत्यन्त श्रद्धा पूर्वक यज्ञ में आहुति अर्पित की। यज्ञोपरान्त सुस्वादु भोजन की व्यवस्था की गई थी।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।